काशी हिन्दू विश्वविद्यालय BANARAS HINDU UNIVERSITY

राजभाषा प्रकोष्ठ

अपील

हिंदी केवल एक सरल, समृद्ध और सशक्त भाषा ही नहीं अपितु एक संस्कृति है। इसके व्यापक स्वरूप को देखते हुए ही हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को इसे राजभाषा का दर्जा दिया और तब से यह केन्द्र सरकार के कार्यालयों में काम-काज की भाषा के रूप में उपयोग में लाई जा रही है। साथ ही, देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक भारत रत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने हिन्दी की सामर्थ्य को बहुत पहले ही पहचान लिया था। राष्ट्रभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा था कि अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है। गांधी जी ने भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रजत जयंती दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा था कि हमारे व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

तकनीकी विकास के फलस्वरूप भी हिंदी का दायरा विस्तृत हुआ है तथा सोशल मीडिया में भी इसका भरपूर उपयोग हो रहा है। यूनिकोड एवं अन्य ई-उपकरणों (गूगल वाइस टाइपिंग, हिंदी फांट कनवर्टर, मशीन अनुवाद, ई-महाशब्दकोश इत्यादि) के माध्यम से पहले की तुलना में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अत्यंत ही सरल हो गया है।

यह सर्वविदित है कि सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। तथापि, इसे और अधिक गति देने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में समय-समय पर सरकार द्वारा हिंदी के संबंध में जारी किए जाने वाले आदेशों, अनुदेशों इत्यादि का गंभीरतापूर्वक अनुपालन किया जाना चाहिए।

हमारे विश्वविद्यालय के कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। तथापि, संघ की राजभाषा नीति के समग्र क्रियान्वयन के लिए हमें वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुरूप कार्य करना पड़ेगा ताकि अन्य संस्थाओं के लिए हम आदर्श बन सकें तथा हम अपने संवैधानिक दायित्वों का समुचित तरीके से निर्वहन कर सकें।

हिंदी-दिवस के इस अवसर पर आप सभी से मेरी यह अपील है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कार्यालय का काम-काज हिंदी में ही करें तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

विश्वविद्यालय के समस्त सदस्यों को हिंदी दिवस की बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द !

वाराणसी, 14.09.2017

(गिरीश चन्द्र त्रिपाठी)
कुलपति